प्रातः क्लास 14-12-68 ओम शान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। समझाते तब हैं जब कि यह शरीर है। सम्मुख ही समझाना होता है। जो सम्मुख समझाया जाता है वह फिर लिखत द्वारा सभी के पास जाती है। तुम यहां आते हो सम्मुख सुनने। वेहद का बाप आत्माओं को सुनाते हैं। आत्मा ही सुनती है। सभी कुछ आत्मा करती है इस शरीर द्वारा। इसलिये पहले2 अपने को आत्मा जरूर समझना है। जब कि बाप आया इतना नजदीक है। ज्ञान भी है आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... सबसे पहले 2 बाप से कौन बिछुड़ कर आते हैं। यहां पार्ट बजाने। तुमसे पूछेंगे कितना समय बाप से अलग रहे हो? तो तुम कहेंगे 5000 वर्ष। थोड़ा कम जास्ती भी कह सकते हैं। हिसाबी हिसाब है ना। यह तो तुम बच्चों को पता है कैसे नम्बरवार आते हैं। मैं (अर्थात वेहद का बाप) जो ऊपर में थे वह अब नीचे आ गये हैं तुम सभी की हेटरी जानने। अभी बाप को याद करना है। अभी तो बाप सम्मुख है ना। जो ऊपर में बाप को याद करते होंगे वह हैं भक्ति मार्ग। क्योंकि उन्हों को आत्मा परमात्मा का पता ही नहीं है। न उनके नाम रूप देश काल का ही पता है। तुमको तो नाम-रूप देश-काल का पता है। तुम जानते हो इस रथ द्वारा हमको बाप सभी राज़ समझाते हैं। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज समझा है। यह कितना सूक्ष्म है। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीज रूप बाप ही है। वह यहां आते जरूर हैं। नई दुनिया स्थापन करना उनका ही काम है। ऐसे नहीं वहां बैठे स्थापन करते हैं। तुम बच्चे जानते हो बाबा इस तन द्वारा हमको सम्मुख समझा रहे हैं। यह भी बाप को प्यार करना हुआ ना। और कोई को भी उनकी बायोग्राफी का पता नहीं है। गीता भी है आदि सनातन देवी देवता धर्म का शास्त्र। यह भी तुम बच्चे जानते हो इस ज्ञान के बाद है विनाश। विनाश जरूर होना है। और जो भी धर्म स्थापन होते हैं उनके टाईम पर विनाश नहीं होता है। विनाश का टाईम ही यह है। इसलिये तुमको जो ज्ञान मिलता है वह फिर खलास हो जाता है। तुम बच्चों को बुद्धि/सभी बातें हैं। तुम रचयिता और रचना को जान गये हो। है दोनों अनादि। जो चलते आते हैं। बाप का पार्ट है ही संगम पर आने का। मनुष्य समझते हैं आधा कल्प ज्ञान देते रहते हैं। बाप समझाते हैं ज्ञान और भक्ति कहा जाता है। भक्ति तो आधा कल्प चलती रहती है। ज्ञान नहीं चलता ज्ञान का आधा कल्प बस मिलता है। ज्ञान तो सिर्फ एक ही बार संगम पर मिलता है। यह क्लास तुम्हारा एक ही बार होता है। यह बातें अच्छी रीत समझकर फिर औरों को समझाना भी है। तुम्हारा सारा पद का मदार है सर्विस पर। तुम जानते हो पुरुषार्थ से नई दुनिया में जाना है। धारणा कर फिर औरों को समझाना, इस पर तुम्हारा पद है। विनाश होने के पहले सभी को बाप का परिचय देना है और रचना के आदि मध्य अन्त का परिचय देना है। तुम भी बाप को याद करते हो कि जन्म जन्मान्तर के पाप कट जायें। जब तक बाप पढ़ाते रहते हैं, याद तो जरूर करना है। पढ़ाने वाले साथ योग तो रहेगा ना। टीचर पढ़ाते हैं तो उनके साथ योग रहता है ना। योग बिगर पढ़ेंगे कैसे। योग अर्थात पढ़ने वाले की याद। यह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। तीनों रूपों में पूरा याद करना पड़ता है। फिर तो कोई गुरु मिलना ही नहीं है। आधा कल्प नो गुरु। अभी तो कितने ढेर गुरु हैं। एक गुरु सारा चेला बैठा तो फिर उनको भी गुरु कह देते। तो सद्गुरु एक ही बार मिलता है। ज्ञान से सद्गति मिली। बस। फिर गुरु की रस्म ही खत्म। बाप की, टीचर की रस्म चलती है गुरु की रस्म खत्म हो जाती है। सद्गति मिल गई ना। निर्वाणधाम में तुम प्रैक्टीकल में जाते हो। फिर अपने समय पर पार्ट बजाने आवेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों तुमको मिलती है। थोड़े समय के लिये घर जाकर रहेंगे। यहां तो शरीर से पार्ट बजाना पड़ता है। पिछाड़ी में सभी पार्टधारी आवेंगे। नाटक जब पूरा होता है सभी एक्टर्स स्टेज पर आ जाते हैं। अभी भी सभी एक्टर्स स्टेज पर आकर इकट्ठे हुये हैं। कितना घोर-घमसान है। सतयुग आदि में इतना घोर-घमसान आदि थोड़े ही था। अभी तो कितनी अशान्ति है। तो अब जैसे बाप की सृष्टि चक्र का नालेज है तुम बच्चों को भी नालेज है। बीज की नालेज है ना हमारा झाड़ कैसे वृद्धि को पाकर फिर खत्म होता है। अभी

तुम बैठे हो नई दुनिया का सैपलिंग लगाने। आदि सनातन देवी देवता धर्म का सैपलिंग लगाने। तुमको पता है इन ल0ना0 ने राज्य कैसे पाया। तुम बच्चों को समझाना चाहिए हम अभी नई दुनिया में जाकर प्रिन्स बनेंगे। नई दुनिया में रहने वाले सभी अपने को मालिक ही कहेंगे। जैसे अभी भी कहते हैं हमारा भारत देश है। तुम समझते हो यह भारत वेश्यालय है। तो ऐसे नहीं कहेंगे भारत वेश्यालय हमारा देश है। यह भी तुम समझते हो। अभी हम संगम पर खड़े हैं। वेश्यालय देश से जाने वाले हैं। बस अभी गये कि गये। हम जाकर शिवालय के मालिक बनेंगे। तुम्हारी एमआबजेक्ट ही यह है। शिवालय के मालिक बनना है। यथा राजा रानी तथा प्रजा सभी शिवालय के बन जाते हैं। बाकी राजधानी में भिन्न2 स्टेट्स तो होते ही हैं। वहां वजीर तो कोई होता ही नहीं। वजीर तब होते हैं जब पतित बनते हैं। ल0ना0 वा राम सीता का कब वजीर न सुना होगा। वह स्वयं ही खुद सतोप्रधान पावर वाले हैं। फिर जब पतित बनते हैं तब राजा रानी एक वजीर रखते हैं राय लेने लिये। अभी तो देखो कितना अनेक वजीर हैं। क्योंकि पत्थर बुधि है ना। दूसरे से राय लेने वाले खुद मूर्ख ठहरे ना। वह समझते हैं यह हमारी बड़ाई है। और तुम समझते हो वेअकलपना है। टु मैनी वैअकल हैं अभी देखो बहुत वजीर। फिर नो वजीर। यह बड़ा मजे का खेल है। खेल हमेशा मजे का ही होता है। इस बेहद के खेल को तुम ही जानते हो। इसमें रोने-पीटने आदि की बात ही नहीं। गाते भी हैं बीती सो बीती देखो ....बनी बनाई बन रही ... यह नाटक तुम्हारे बुधि में है। हम इनके एक्टर्स हैं। हमारा 84जन्मों का पार्ट एक्युरेट अविनाशी है। जो जिस जन्म में जो एक्ट करते आये हैं वही करते रहेंगे। आज से5000 वर्ष पहले भी तुमको यही कहा था कि अपने को आत्मा समझो। गीता में भी अक्षर है। तुम जानते हो बरोबर आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन हुआ था। तो बाप ने कहा था देह सहित देह के सभी धर्म को छोड़ अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो। पतितपावन का अर्थ भी तो बाप ने समझाया है। भाषा भी यही है। यहां तो देखो कितने ढेर भाषाएं हैं। भाषा पर कितना हंगामा होता है। भाषा बिगर तो कोई काम चल न सके। ऐसे2 भाषाएं सीखकर आते हैं। जो अंदर लैंगवेज खलास हो जाती है। जो जास्ती भाषाएं सीखते हैं उनको ईनाम मिलता है। जितने धर्म उतनी भाषाएं होंगी। वहां तो तुम जानते हो अपनी ही राजाई होगी। भाषा भी एक होगी। यहां तो 100 माईल पर एक भाषा है। वहां तो एक ही भाषा होती है। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। तो तुम उस बाप को याद करते हो। शिव बाबा समझाते हैं ब्रह्मा द्वारा। रथ तो जरूर चाहिए ना। शिव बाबा हमारा बाप है तो उनको भाकी पहननी चाहिए। परन्तु बाबा कहते हैं मैं तो बेहद के बच्चे हैं कहां तक भाकी पहनेंगे। इतने को तो भाकी पहन न सके। बाबा इसमें पढ़ाते हैं ना। टीचर को कब भाकी थोड़ेही पहनते हैं। बाबा तो तुमको पढ़ाने आते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। टीचर ठहरा ना। टीचर को भाकी नहीं पहनी जाती। बाप राजयोग सिखलाने आया हुआ है। तुम कोई छोटे बच्चे थोड़ेही हो। जो भाकी चाहिए। स्टुडेन्ट कब टीचर को भाकी पहनते हैं क्या। यह रस्म भी बाप बन्द कर देंगे। भाकी पहनकर फिर धोखा भी बहुत देते हैं। एक बाप के बनकर फिर औरों से दिल लगा लेते। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखलाने आया हुआ हूं। तुम भाकी कैसे पहनेंगे। तुम शरीर धारी, हम अशरीरी ऊपर में रहने वाले। कहते भी हो बाबा पावन बनाने आओ तो गोया तुम पतित हो ना। तो फिर मैं को तुम भाकी कैसे पहन सकते हो। जब कम्पलि पावन बनो तब भाकी पहनना। पतित कैसे पहनेंगे। प्रतिज्ञा करके फिर पतित बन जाते हैं। जब एकदम पावन बन जावेंगे पिछाड़ी में, फिर भाकी। फिर याद में भी रहेंगे। टीचर को, गुरु को याद करते रहेंगे। अभी तो छी छी बन पड़ते हो। और ही सैपादण्ड पड़ जाता है फिर भाकी क्यों पहनेंगे। यह तो बीच में दलाल के रूप में मिला है। दलाल को भाकी थोड़ेही पहनी जाती है। सिर्फ याद करना है। बाप कहते हैं मैं भी उनका पुर्वी बच्चा हूं। फिर मैं कहां भाकी पहन सकता हूं। तुम फिर भी इस शरीर द्वारा भाकी पहन सकते हो। मैं उनको कैसे भाकी पहनूं यह भी कोई ख्याल करे हम शिव बाबा को भाकी पहनता हूं। एक बाप को ही याद करो। प्यार करो। याद से

१४-१२-६८

याद से पावर बहुत मिलती है। बाप सर्वशक्तिवान है। बाप से तुम्हें इतनी पावर मिलती है। तुम कितने बलवान बनते हो जो तुम्हारे राजधानी पर कोई जीत पा न सके। रावण राज्य भी ही खत्म हो जाता है। वहां दुःख देने वाला कोई रहता ही नहीं। उनको सुखधाम कहा जाता है। रावण सारे विश्व को दुःख देने वाला है। जानवर भी दुःखी होते हैं। वहां तो जानवर भी आपस में प्रेम से रहते हैं। यहां तो प्रेम है नहीं। स्त्री पुरुष प्रेम में फांस कटारी चलाते हैं गोया खून करते हैं तो इसको प्यार कहेंगे क्या। इसलिये सन्यासी लोग कहते हैं स्त्री सर्पणी है, डंसती है, न साथ में होंगे न डंसेंगी। इसलिये खुद जंगल में चले जाते हैं। बाप समझाते हैं वह भी पवित्रता के कारण मददगार होते हैं परन्तु इस समय तो तमोप्रधान बन गये हैं तो कुछ भी मदद नहीं करते योगबल की। योगबल को वह जानते ही नहीं। बाकी ब्रह्म को याद करते हैं। वह तो घर है ना। हम कहते हैं ब्रह्म तत्व में जाकर रहें। वह कहते हैं ब्रह्मतत्व में लीन हो जावेंगे। फर्क यह है। वह कहते हैं हम ब्रह्म को याद करते हैं, याद करते2 मर्ज हो जावेंगे। यह ड्रामा कैसे फिरता है जो बाप बैठ समझाते हैं। बच्चे तो सभी हैं ना। कोई अच्छी रीत पढ़ते हैं कोई कम पढ़ते हैं। पढ़ते तो सभी हैं ना। सारी दुनिया भी पढ़ेगी। अर्थात बाप को याद करेगी। बाप को याद करना यह भी पढ़ाई है ना। वह कहते हैं अल्ला हूं अल्ला हूं। यह है उल्टी पढ़ाई। सर्वव्यापी कहो वा अल्ला कहो बात एक ही है। उसका अर्थ नहीं समझते हैं। अल्ला हूं का अर्थ ही है सर्वव्यापी। अल्ला को याद करते हैं, सर्व का सदगति दाता सभी को सुख देने वाला है। कहते भी हैं आकर पावन बनाओ तो जरूर पतित ठहरे। पतित फिर अल्ला कैसे होंगे। अल्ला विकार में कैसे जावेंगे। अल्ला तो आते ही हैं विकारियों को निर्विकारी बनाने। पुकारते भी हैं कि हे अल्ला आकर हमको गुल2 पावन बनाओ। उनका यह ही धंधा है इसलिये बुलाते हैं आकर पावन बनाओ। तुम्हारी भाषा भी कैचट है। वह लोग कहते हैं अल्ला। वह कहते हैं गाड। गाड फादर भी कहते हैं। पिछाड़ी वालों की बुधि में फिर भी अच्छी रहता है। इतना दुःख नहीं उठाते। तो अभी तुम सम्मुख बैठे हो। क्या करते हो। बाबा को इस भृकुटि में देखते हो। बाबा फिर तुम्हारे भृकुटि में देखते हैं। जिसमें मैं प्रवेश करता हूं उनको देखता हूं। वह तो बाजु में बैठा है। यह बड़ी सूक्ष्म की बातें हैं। मैं इनके बाज में बैठा हुआ हूं। यह भी समझते हैं हमारे बाजु में बैठे हैं। तुम कहेंगे हम सामने को देखते हैं। बाप और दादा। दोनों की आत्मा को देखते हैं। यह तुम्हारे में ज्ञान है। बाप दादा किसको कहते हो, आत्मा को। आत्मा सामने बैठी है। भक्ति मार्ग में तो बहुत आंखें बन्द कर बैठते हैं। पढ़ाई कोई ऐसे थोड़ही होती है। टीचर को तो देखना पड़े ना। यह तो बाप भी है टीचर भी है तो सामने देखना होता है। सामने बैठे और आंखें बन्द हो, पिनकी खाते रहे तो ऐसे पढ़ाई तो होती नहीं। स्टुडन्ट टीचर को जरूर देखता रहेगा। नहीं तो टीचर कहेंगे यह तो झुटका खाते रहते हैं, यह कोई भांग पीकर आये हैं। तुम्हारी बुधि में है बाबा इस तन में है। मैं बाबा को देखता हूं। बाप समझाते हैं यह कलस का तो नहीं है जो कोई आंखें बन्द कर बैठे। स्कूल में कब कोई आंखें बन्दकर बैठते हैं क्या। और सतसंगों को स्कूल नहीं कहा जाता। भल गीता आदि बैठ सुनाते हैं परन्तु उसको स्कूल नहीं कहा जाता। वह कोई बाप थोड़ेही है जिसको देखे। कोई2 शिव के भक्त होते हैं तो शिव को ही याद करते हैं। कान से कथा सुनते रहते। शिव की भक्ति कर शिव को ही याद करना पड़े। कोई भी सतसंग में प्रश्न आदि नहीं होता। यहां होता है। यहां तुम्हारी आमदनी बहुत है। आमदनी में कब उदासी नहीं आ सकती। धन मिलता है ना। तो खुशी होती है। उदासी गम की निशानी है। बिमारी होगा दिवाला निकलाहोगा तो उदासी आती है। पैसा मिलता रहेगा तो उदासी नहीं आवेगी। बाबा व्यापारी भी है ना। रात को स्टीम्बर आते थे तो रात को जागना पड़ता था। कोई कोई बेगम्सराल को आती है तो सिर्फ फिमेल्स के लिये ही खुला रहता है। बाबा भी कहते हैं प्रदर्शनी आदि में फिमेल्स के लिये खास दिन रखो तो बहुत आवेंगे पर्दे नसीन भी आवेंगे। बहूजी पर्दे नसीन रहती है। मोटर में भी पर्दा रहता है। यहां तो आत्मा की बात है। पर्दा [illegible] ज्ञान मिल गया तो पर्दा भी खुल जावेगा। सतयुग में पर्दा होता नहीं। यह भी खत्म

हो जावेंगी। आरते2 मुंह आदि खुल जाता है। सन्यासी जब कि नागिन कह भागते हैं तो फिर उनको मुंह देखना न है। वह तो स्त्री को नर्क का दवार समझकर भागते हैं। शुरू में फिर भी कुछ सतोप्रधान थे। परन्तु भागते तब हैं जब बालिग होते हैं। नागे लोग जब कुम्भ के मेले पर आते हैं तो उनमें बच्चे2 भी बहुत आ जाते हैं। जांच करनी चाहिए बच्चे2 कैसे आते हैं। यह लोग कोई दवाई खा लेते हैं तो फिर कर्म ईन्द्रियां ठंढी हो जाती है। यहां तो योगबल से कर्मईन्द्रियों को बस करना है। तब मंथली, डिसचार्ज आदि भी बन्द हो। वहां यह बिमारी आदि होती नहीं। यह किचड़ पट्टी रावण राज्य में होते हैं। वहां तो है ही रामराज्य। बिमारी का नाम-निशान भी नहीं होता। अछूत होना भी वहां नहीं होता। यह भी खराबी है ना। वहां कुछ भी नहीं होती। बाकी दास दासियां भी यहां बनने हैं। यह तो सभी चाहिए ना। चण्डाल भी तो जरूर चाहिए। आजकल तो ऐसी आदि निकली हैं जो डालो और खलास। वहां ठहरने की भी दरकार नहीं। पिछाड़ी को तो जलाने अथवा पीटने की दरकार ही नहीं रहेंगी। सभी को आग लग जावेंगी। नेयरल कैलेमिटिज तो सभी आ जाती है ना। सभी जलकर भस्म हो जावेंगे। घोर-अंधयारे में जो रहते हैं वह सभी खत्म हो जाते हैं। तुम आगे चल बहुत कुछ देखेंगे। फिर शरीर छोड़ेंगे तो सभी कुछ भूल जावेंगे। अभी तुम समझते हो नई दुनिया में हम कैसे राज्य करेंगे। वहां तो सभी सुख सुख होंगे। सोने की महल बनेंगे झट। आजकल मकान देखो कैसे तैयार होते हैं। वहां तो साइंस का जोर होता है। मजबूत लोहा आदि होगा। ईंटें भी मशीन पर बनते होंगे। खुशी की बात है ना। बाकी थोड़े रोज हैं। तो क्यों नहीं बाप को याद कर और बाप से पूरा वरसा ले लेना चाहिए। इसमें गफ्लत क्यों करनी चाहिए। बाप कहते हैं महावीर बनना है। कब माया से हराना न है। बाबा जानते हैं कल्प पहले मिसल जितना जो महावीर बनेंगे हैं वह बनेंगे। जितना कल्प पहले महावीर बनने में टाईम लगा है उतना लगेगा। एक मिनट भी आगे पीछे नहीं हो सकता। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो और इस सृष्टि चक्र को जानो। चक्र को तो तुम जानते हो ना। उठते बैठते चलते बुधि में यह याद रहनी चाहिए। पिछाड़ी के रिजल्ट भी बता देते हैं। इनाम कोई थोड़ेही मिलता है। तुम पीस ब्रेकर्स हो। जो जानते हो हम विश्व में पीस स्थापन कर रहे हैं। कोई जानते हैं, कोई नहीं जानते हैं। समझाया जाता है विनाश सामने खड़ा है। बाप स्वर्ग नई दुनिया स्थापन करते हैं। पुरानी दुनिया को आग लगनी है। सतयुग में तो बहुत थोड़े होते हैं। टाईम भी देखते हैं। आगे चलकर देखते रहेंगे। एक दो के मुंह में आते रहते हैं। समझते हैं इन से तुम बड़ी फिर महाभारी लड़ाई हो जावेंगी। परन्तु बाप समझाते हैं अभी टाईम चाहिए। बच्चे ही अजन तैयार नहीं हुये हैं। सभी को मैसेज ही नहींपहुंचाया है। सारी सूर्यवंशी चन्द्रवंशी राजधानी स्थापन होती है। तो वन्डर है ना। इसलिये बाप समझाते रहते हैं अपने आप को सम्भालो। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। जितना भविष्य ऊंच पद पाना हो उतना तुम अपने पुरुषार्थ से ले सकते हो। इसमें आर्शीवाद वा कृपा आदि की बात नहीं। ऐसे नहीं बाप सभी पर आर्शीवाद करेंगे। हरेक नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार इम्तहान में पास होना है। जिन्होंने कल्प पहले ऊंच पद पाया है वही पद पावेंगे। पुरुषार्थ पुरुषार्थ और पुरुषार्थ। बाप जानते हैं ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ भी जरूर करेंगे। कल्प पहले भी किया है। अपने साक्षी हो देखते हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

सूचना :- अलवर सेन्टर का एड्रेस यह है :-

प्रेषक प्रजा-पिता ब्रह्मा कुमारीज

ईश्वरीय विश्व- विद्यालय

गोविन्द भवन

नला शीशगरान, अलवर